॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

पञ्चकालिक-सरल-सुगम-

श्रीभगवत्सेवा-पद्धतिः

श्रीगोविन्ददास 'सन्त'
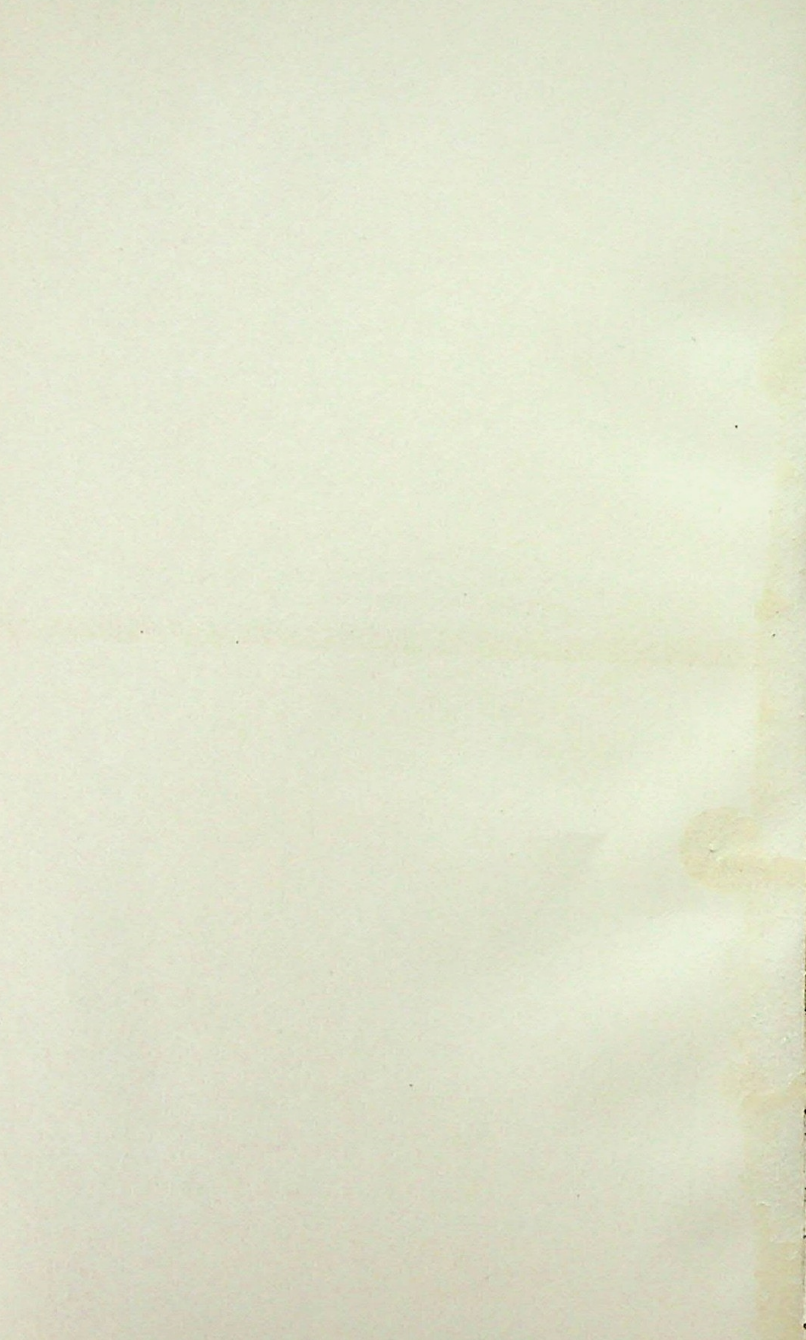
✽ श्रीसर्वेश्वरो जयति ✽
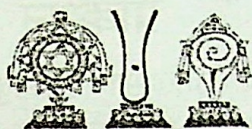
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

पञ्चकालिक--सरल--सुगम-

श्रीभगवत्सेवा पद्धतिः

सम्पादक-

पं० श्रीगोविन्ददास सन्त

धर्मशास्त्री पुराणतीर्थ

प्रकाशक-

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ--सलेमाबाद

द्वितीयावृत्ति	श्रीराधाष्टमी महोत्सव	न्यौछावर
२०००	वि० सं० २०५६	सात रुपये

* प्राक्कथन *

भक्त प्रह्लाद श्रीनृसिंह भगवान् की स्तुति करते हुए कहते हैं कि-हे परम पूज्य परमात्मन् ! आपकी सेवा के ६ अङ्ग हैं-नमस्कार, स्तुति, कर्म समर्पण, सेवा-पूजा, श्रीचरणारविन्दों की स्मृति और कथा श्रवण । सेवा के इन ६ अंगों बिना परम हंसों द्वारा सम्मानित आपकी भक्ति कैसे प्राप्त हो सकती है ।

आत्मशुद्धि, स्थानशुद्धि, मन्त्रशुद्धि, द्रव्यशुद्धि, देवशुद्धि इन पाँचों कर्मों के किये बिना देवार्चन कैसे बनेगी ।

स्नान, सन्ध्या, जप, देवपूजन, वैश्वदेव और आतिथ्य यह ६ कर्म तो प्रतिदिन करने ही चाहिये ।

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मसमर्पणम् ॥

भगवान् श्रीहरि की पंचकालिक सेवा में उपर्युक्त श्लोक में भगवान् वेदव्यास द्वारा कथित श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्म निवेदन इस नवधा भक्ति के सभी अंगों का समावेश वन जाता है ।

अतः भगवत्सेवा एक आवश्यक कर्म है पूजा पद्धति भी कई एक प्रकाशित हैं, जिनमें वेद मन्त्रों की खूब भरमार हैं । साधारण लिखे-पढ़े पुजारी वर्ग उन्हें शुद्धतया नहीं बोल पाते । इस कारण हमने केवल पौराणिक सरल श्लोक उसके साथ मूलमन्त्र (श्रीगुरु प्रदत्त मन्त्र) और नमस्कारात्मक शब्द पूर्वक प्रत्येक पूजा सामग्री को श्रीप्रभु के अर्पण करते हुए अतीव सरल बनाने की चेष्टा की है ।

सर्वजन हितैषी--
पं० गोविन्ददास सन्त

❊ सम्मति ❊

श्रीमान् पं० श्रीगोविन्ददासजी सन्त द्वारा श्रीराधामाधव-युगल प्रभु की पंचकालीन सेवा पुस्तिका की पाण्डुलिपि आद्योपान्त देखने का मुझे अवसर मिला। श्रीमद्भागवत में स्वयं भगवान् ने कर्मकाण्ड को अपार बताया है-**नास्त्यंतोऽनंत पारस्य कर्मकांडस्य चोद्धव** तो विषय की गहनता का इससे अधिक प्रमाण अन्य क्या हो सकता है।

यद्यपि इस गम्भीरता-गहनता को सरल करने के लिये पूर्ववर्त्ती विद्वानों ने बहुत प्रयत्न किया है। जैसे श्रीलाडलीशरणजी ब्रह्मचारी ने **नित्यकर्म पद्धति**, परमपूज्य श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज ने **श्रीगोपाल पूजा पद्धति**, प्रातः स्मरणीय श्रीनारायणशरणदेवाचार्यजी महा-राज ने **सेवा पद्धति** एवं श्रीभागीरथजी शर्मा वेदान्ताचार्य ने **श्रीकृष्णाराधनापद्धति** आदि लिखी जो अद्यापि अधिक उपादेय है परन्तु सर्व साधारण के लिये तो ग्रन्थ का अत्यन्त सरल होना तथा आधुनिक समय में तो संक्षिप्त होना भी अत्यन्त आवश्यक है।

उक्त आवश्यकता की पूर्ति इस पुस्तिका से सानन्द हो जायेगी। विषय का वर्गीकरण तथा न्यास विशेष प्रशंसनीय है। आशा है सभी अर्चक एवं गृहस्थ इसका अधिक से अधिक लाभप्रद उपयोग करेंगे। किमधिकम्।

श्रीमान् गोविन्ददासः स्फुटतरबहुलग्रंथकर्ता द्विजन्मा
श्रीराधामाधवस्य प्रियतमयुगलोपासनोल्लासितात्मा
श्रीद्वैताद्वैत-विद्याश्रुतिगणशिखरस्तत्र वैशद्यमाप्तो
ह्याकार्षीद् गूढशास्त्रेष्वतिशयसरलां पंचकालीन-सेवाम्

--पं० राधावल्लभ शास्त्री

मु. कचनारिया पो. धांधोली, वाया-दूदू (जयपुर)

❋ प्रार्थना ❋

श्रीकृष्ण चन्द्र कृपालु भजु मन, नन्दनन्दन यदुवरम् ।
आनन्दमय सुखराशि व्रजपति, भक्तजन संकटहरम् ॥
शिर मुकुट कुण्डल तिलक उर, वनमाल कौस्तुभ सुन्दरम् ।
आजानु भुज पट पीत धर, कर लकुटि मुख मुरली धरम् ॥
वृषभानुजा सह राजहिं प्रिय, सुमन सुभग सिंहासनम् ।
ललितादि सखिजन सेवहिं, लिए-छत्र-चामर-व्यञ्जनम्॥
पूतना-तृण-शकट-अघ-बक, केशि व्योम विमर्दनम् ।
रजक-गज-चाणूर-मुष्टिक, दुष्ट कंस निकन्दनम् ॥
गो-गोप-गोपीजन सुखद, कालीय विषधर गंजनम् ।
भव भय हरण अशरणशरण, ब्रह्मादि मुनि मन रंजनम् ॥
श्यामा-श्याम करत केलि, कालिन्दी तट नट नागरम् ।
सोई रूप मम हिंय बसहु नित, आनन्दघन सुख सागरम् ॥
इति वदति सन्त सुजान, श्रीसनकादि मुनिजन सेवितम् ।
भव भीति हर मम दीनबन्धो ! जयति जय सर्वेश्वरम् ॥

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

पञ्चकालिक--

* भगवत्सेवा पद्धतिः *

मंगलाचरण-

सर्वेश्वरं कृपासिन्धुं सेव्यं श्रीसनकादिकैः ।
जयदेवसमाराध्यं श्रीराधामाधवं नुमः ॥

दैनिक कर्म-

स्नानं सन्ध्या जपश्चैव देवतानाञ्च पूजनम् ।
वैश्वदेवं तथातिथ्यं षट् कर्माणि दिने-दिने ॥

* आत्मशुद्धि *

प्रातः कालीन कृत्य--

प्रतिदिन प्रातः यदि ग्रीष्मकाल हो तो ३ और ४ के बीच तथा शीतकाल हो तो ४ और ५ के मध्य ब्राह्म मुहूर्त में उठ जाना चाहिए । भजन-साधना के लिए दिन के अन्य समय की अपेक्षा ब्राह्म मुहूर्त ही श्रेष्ठ है । ब्राह्म मुहूर्त में सोना एवं निद्रा लेना ठीक नहीं । कहा भी है--

रात्रेः पश्चिमयामस्य मुहूर्तो यस्तृतीयके ।
ब्राह्ममुहूर्तो विज्ञेयो विहितः स प्रबोधने ॥

(विष्णु पुराण)

आत्म स्थानमनुद्रव्यं देवशुद्धिस्तु पंचमी ।
यावन्न कुरुते मन्त्री तावद्देवार्चनं कुतः ।।
(कुलार्णव पटल)

ब्राह्मे मुहूर्ते या निद्रा सा पुण्यक्षयकारिणी

ब्राह्म मुहूर्त में निकाली हुई निद्रा अपने पुण्य का क्षय करती है। अथवा-सूर्योदयेचास्तमितेशयानं विमुञ्चति श्रीर्यदि चक्रपाणिः ।। अतः वह समय तो बताया है--

ब्राह्मे मुहूर्ते पुरुषस्त्यजेन्निद्रामतन्द्रितः
ब्राह्मेमुहूर्ते चोत्थाय चिन्तयेदात्मनो हितम्
ब्राह्मेमुहूर्ते चोत्थाय परंब्रह्म विचिन्तयेत्
ब्राह्मे मुहूर्ते वुध्येत धर्मार्थौं चानुचिन्तयेत्

साधकों के लिये भगवद्भजन और विद्यार्थियों के लिये स्वाध्याय करना । शय्या से उठकर दीपक किंवा लाईट (प्रकाश) करके अपने इष्टदेव और गुरुजनों के चित्रपट के दर्शन स्वकर-तलावलोकन करे । मन्त्र--

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
कर मूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ।।

भूमि वन्दना--

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।

भूमि की वन्दना करते हुये शय्या से उतर कर मुख शुद्ध्यर्थ तीन गण्डूष (कुरले) करके नेत्रों पर जल का स्पर्श कर आसन पर बैठ के कुछ समय प्रातः स्मरण करे ।

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजभावयुक्तम् ।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद् गुरुं नित्यमहं नमामि ।।
कारुण्यसिन्धुं स्वजनैकबन्धुं कैशोरवेषं कमनीयकेशम्।
कालिन्दिकूले कृतरासगोष्ठीं सर्वेश्वरं तं शरणं प्रपद्ये ।।

प्रातः स्मरामि दधिघोषविनीतनिद्रं
निद्रावसान--रमणीयमुखानुरागम् ।
उन्निद्रपद्मनयनं नवनीरदाभं
हृद्यानवद्यललनाञ्चितवामभागम् ।।

स्वभावतोऽपास्तसमस्तदोष-
मशेषकल्याणगुणैकराशिम् ।
व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं
ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम् ।।
अंगे तु वामे वृषभानुजां मुदा
विराजमानामनुरूपसौभगाम् ।
सखीसहस्रैःपरिसेवितां सदा
स्मरेम देवीं सकलेष्टकामदाम्।।

नान्या गतिःकृष्णपदारविन्दात्
संदृश्यते ब्रह्मशिवादिवन्दितात् ।
भक्तेच्छयोपात्तसुचिन्त्यविग्रहा-
दचिंत्यशक्तेरविचिंत्यसाशयात् ॥
नमामि राधापतिपादपल्लवं
भजामि राधापतितत्त्वमक्रियाम् ।
वदामि राधापति नामनिर्मलं
करोमि राधापति सेवनं सदा ॥
जयति जयति राधाकृष्णयुग्मं वरिष्ठं
व्रतसुकृतनिदानं यत्सदैतिह्यमूलम् ।
विरलसुजनगम्यं सच्चिदानन्दरूपं
व्रजवलयविहारं नित्यवृन्दावनस्थम् ॥
नमस्तस्मै भगवते कृष्णायाऽकुण्ठमेधसे ।
राधाधरसुधासिन्धौ नमो नित्यविहारिणे ॥
राधां कृष्णस्वरूपां वै कृष्णं राधास्वरूपिणम् ।
कलात्मानं निकुञ्जस्थं गुरुरूपं सदा भजे ॥
श्रीमद्धंसं कुमारांश्च नारदं मुनिपुङ्गवम् ।
निम्बार्कं श्रीनिवासं च प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥
श्रीमते सर्वविद्यानां प्रभवाय सुब्रह्मणे ।
आचार्याय मुनीन्द्राय निम्बार्काय नमोनमः ॥
कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।
प्रणतः क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमोनमः ॥

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ।।
ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमि सुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ।।

शौचकर्म--

पश्चात् जङ्गल या घर ही में जहाँ जैसी सुविधा हो शौचादि से निवृत्त हो हाथ-पैर धोने में साबुन की अपेक्षा शुद्ध मृत्तिका ही श्रेष्ठ मानी गई है, फिर जहाँ जैसी परिस्थिति हो । हाथ-पैर धोकर कुरला कर ले । तदनन्तर दन्तधावन करें ।

दन्त-धावन--

दाँतुन में अपामार्ग एवं शर पुंखा आदि के बहुत से वृक्ष बताये हैं, किन्तु हमारी समझ से अपना देशी बंबूल का दाँतुन ही अच्छा है, कारण कि उससे जीभ एवं मुख शुद्धि भली प्रकार से हो जाती है । दाँतुन के १२ अंगुल का प्रमाण है । उसको धोकर निम्नलिखित मन्त्र बोलकर दाँतुन करें ।

आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजापशुवसूनि च ।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ।।
(विश्वामित्र कल्प)

इसके अतिरिक्त किसी दन्त मंजन आदि से दाँतुन करना हो तो कौनसी अंगुली से करे इसका भी प्रमाण है--

मध्यमानामिकाभ्यां च वृद्धांगुष्ठेन च द्विज ।
दन्तस्य धावनं कुर्यान्न तर्जन्या कदाचन ॥

(पद्मपुराण)

मध्यमा, अनामिका अथवा अंगूठे से ही दन्त मंजन करे, किन्तु तर्जनी अंगुली से कदापि दाँत साफ न करे । दन्त मंजन करते समय मौन रहे किसी से बोले नहीं, लिखा है--

उच्चारे मैथुने चैव प्रश्रावे दन्त धावने ।
श्राद्धे भोजनकाले च षट्सु मौनं समाचरेत ॥

(हारितस्मृति)

दाँतुन करके मुख शुद्धि करते समय पानी के कुरले अपने बांयी ओर ही करे । यही विधान शौचादि क्रिया में भी समझे । कारण कि--

पुरतः सर्वदेवाश्च दक्षिणे पितरस्तथा ।
ऋषयः पृष्ठतः सर्वे वामे गण्डूषमाचरेत् ॥

(प्रयोगपारिजाते)

सामने सम्पूर्ण देवगण और दक्षिण की ओर पितर तथा पीठ पीछे ऋषिगण निवास करते हैं । अतः बाँयी ओर ही कुरला करे ।

क्षौरकर्म--

क्षौर कर्म में और वारों की अपेक्षा बुध शुक्र ही उपयुक्त माने गये हैं। किन्तु कई एक महानुभावों का नित्य दाढ़ी बनाने का ही नियम रहता है उनके लिये तो इन बातों का कोई विचार नहीं,

सभी वार शुभ है । एकादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, व्यतिपात व्रत, श्राद्ध एवं शनि, मंगल के दिन क्षौर नहीं कराना चाहिये ।

तैलाभ्यङ्ग--

> **तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः ।**
> **बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम् ॥**
> (ज्योतिषसार)

भारतीय संस्कृति में प्रत्येक कार्य में शुभ दिन वार लेने का विधान है, अतः तैलाभ्यङ्ग (तेल मालिस) में भी सोम, बुध, शनि ये तीन वार और वारों की अपेक्षा श्रेष्ठ बतलाये है । यदि अन्य वारों में भी आवश्यकता पड़ जाय तो उसका परिहार भी बतलाया है । जैसे--

> **रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका ।**
> **गोमयं शुक्रवारे च तैलाभ्यङ्गे न दोष भाक् ॥**

रविवार को तेल में एक फूल की पंखडी डालना तथा गुरुवार को दूब का टुकडा, मंगल को तेल से थोडी मिट्टी का स्पर्श एवं शुक्र को तेल से गोमय का स्पर्श कराकर तेल की मालिश कराने में दोष हट जाता है । नित्य तेल की मालिश कराकर स्नान करने वालों के लिये तथा बालों में सुगन्धित तेल लगाने आदि में कोई दोष नहीं ।

स्नान--

सन्ध्या, पूजन, जप, तप आदि में स्नान कर बैठना परमावश्यक है । बताया है--

अस्नात्वा नाचरेत्कर्म जपहोमादिकं तथा ।
लालास्वेदसमाकीर्णः शयनादुत्थितः पुमान् ।।

(योगी याज्ञवल्क्य)

मनुष्य को स्नान के किये बिना जप, होम इत्यादिक में नहीं बैठना चाहिये । क्योंकि सो कर उठा हुआ मनुष्य थूक, पसीने आदि से अशुद्ध रहता है ।

गुणा दश स्नान परस्य साधो
रूपं च तेजश्च बलं च शौचम् ।
आयुष्यमारोग्यमलोलुपत्वं
दुःस्वप्ननाशश्च यशश्च मेधा ।।

स्नान करने से दश गुण प्राप्त होते हैं । जैसे रूप, तेज, बल, पवित्रता, आयु, आरोग्य, किसी विषय में आसक्त न होना, दुःस्वप्नों का नाश कीर्ति और बुद्धि ।

* स्नान संकल्प *

हरि ॐ तत्सदद्यैतस्य ब्रह्मणोह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेत-वाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गते विष्णु प्रजा-पति-क्षेत्रे श्रीमन्महानद्योः गंगायमुनयोर्पश्चिमे तटे देव-ब्राह्मणानां सन्निधौ श्रीपुष्करक्षेत्रे वा अमुक संवत्सरे अमुक शके अमुकायने

अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकामुकराशौ चन्द्रसूर्यदेवगुर्वादयः शेषेषुग्रहेषु यथा यथा स्थान स्थितेषु सत्सु अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहं ममोपात्तदुरितक्षय द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं श्रीसर्वेश्वर-राधामाधव प्रीतये प्रातः स्नानमहं करिष्ये ।

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैःस्पृष्टानि ते रवे ।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥
पुष्कराद्यानितीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा ।
आगच्छन्तु मया प्रोक्ताः स्नानकाले सदा मम ॥
नमामि गंगे तव पाद पंकजं
सुरासुरैर्वन्दितदिव्यरूपम् ।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं
भावानुसारेण सदा नराणाम् ॥
गंगागंगेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुं लोकं स गच्छति ॥

इत्यादि मन्त्रों से स्नान जल में तीर्थों की भावना करते हुये ग्रीष्मकाल में ठण्डे जल से तथा शीतकाल में ठण्डा या गर्म जैसा भी अभ्यास हो, चोटी की गाँठ खोलकर स्नान कर लेना चाहिये ।

* नित्यकर्म *

कन्धे पर अंगोछा डालकर जल पात्र तिलकस्वरूपादि का साधन लेकर पूर्व किंवा उत्तर की ओर मुख कर आसन बिछाकर बैठ जाना चाहिये । आसन कैसा होना चाहिये--

कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च ।
दारुजं तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेत् ।।

(व्यास)

इनमें से किसी आसन पर बैठकर सन्ध्या वन्दन करना चाहिये । वेद भगवान् कहते हैं--

अहरहः सन्ध्यामुपासीत ।

प्रतिदिन सन्ध्या वन्दन करो ।

सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु ।

सन्ध्याहीन मनुष्य का सभी धार्मिक कृत्यों में अधिकार नहीं ।

बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से शरीर पर छींटा देते हुये--

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

आसन शुद्धिः--

निम्नाङ्कित मन्त्र बोलते हुये अपने आसन पर जल का छींटा देवे ।

ॐ पृथ्वित्वयाधृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।।
ॐ आधारशक्ति कमलासनाय नमः ।
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।

शिखा बन्धन--

स्नाने दाने जपे होमे संध्यायां देवतार्चने ।
शिखाबन्धं विना कर्म न कुर्याद्वै कदाचन ।।

मन्त्र--

चिद्रूपिणी महामाये दिव्यतेजः समन्विते ।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजो वृद्धिं कुरुष्व मे ।।

आचमन--

ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः ।
ॐ माधवाय नमः । ॐ गोविन्दाय नमः ।

हस्तप्रक्षालनम् ।

संकल्प--

संकल्प पीछे स्नान के समय आ चुका है, यहाँ केवल स्नानमहं करिष्ये के स्थान पर सन्ध्यावन्दन महं करिष्ये इतना बोल लेवें ।

तिलक स्वरूप--

बायें हाथ की हथेली पर जल डाल के गोपीचन्दन घिस-कर उसमें शलाका या तर्जनी अंगुली से षट्कोण चक्र बनाकर

उसके मध्य में क्लीं यह काम बीज मन्त्र लिखकर उसको दाहिने हाथ की हथेली से ढँक कर फिर एकादश बार मूल मन्त्र (श्रीगुरु प्रदत्त मन्त्र) से अभिमन्त्रित करके निम्नलिखित मन्त्र से गोपी-चन्दन की प्रार्थना करके शरीर के १२ अंगों में द्वादश तिलक करे । प्रार्थना--

गोपीचन्दनपापघ्न ! विष्णुदेहसमुद्भव ।
चक्रांकितनमस्तुभ्यं धारणान्मुक्तिदो भव ॥

द्वादश तिलक इस प्रकार करे--

१. ॐ केशवाय नमः (ललाटे) । २. ॐ नारायणाय नमः (उदरे) । ३. ॐ माधवाय नमः (वक्षःस्थले) । ४. ॐ गोविन्दाय नमः (कण्ठकूपे) । ५. ॐ विष्णवे नमः (दक्षिणकुक्षौ) ६. ॐ मधुसूदनाय नमः (दक्षिणबाहौ) । ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः (दक्षिणकन्धरे) । ८. ॐ वामनाय नमः (वामपार्श्वे) । ९. ॐ श्रीधराय नमः (वामबाहौ) । १०. ॐ हृषीकेशाय नमः (वामकन्धरे) । ११. ॐ पद्मनाभाय नमः (पृष्ठे) । १२. ॐ दामोदराय नमः (कट्याम्) ।

चक्रधारण का मन्त्र दाहिनी भुजा पर--

सुदर्शन महाबाहो सूर्यकोटिसमप्रभ ।
अज्ञानतिमिरान्धानां विष्णोमार्गं प्रदर्शय ॥

शंख धारण का मन्त्र बायीं भुजा पर--

पाञ्चजन्यनिजध्वान ध्वस्तपातक संचय ।
पुनीहि पापिनं घोरं संसारार्णवपातिनम् ॥

गुरु वन्दना--

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः । ॐ परम गुरुभ्यो नमः । ॐ परात्पर गुरुभ्यो नमः । ॐ सर्व गुरुभ्यो नमः । ॐ अस्मद् गुरुभ्यो नमः ।

प्रणायाम--

प्रणायाम के तीन भेद हैं, पूरक, कुम्भक और रेचक ।

१. दाहिने हाथ के अंगूठे से नासिका के दाहिने छिद्र को दबाकर बांये छिद्र से स्वांस द्वारा वायु को धीरे-धीरे चढ़ाने को **पूरक** कहते हैं ।

२. दाँये छिद्र को तो अंगूठे से दबाये रखे फिर मध्यमा और अनामिका इन दोनों अंगुलियों से बांये स्वर को भी बन्द करले, स्वांस को न चढ़ावे और न उतारे उसको **कुम्भक** कहते हैं ।

३. अब नासिका के दाहिने छिद्र से अंगूठे को हटा करके धीरे-धीरे उतारने का नाम **रेचक** है ।

स्वांस चढ़ाने, रोकने एवं उतारने इन तीनों में ही एक ही स्वांस में बोलने का विनियोग एवं मन्त्र इस प्रकार है ।

विनियोग--

ॐ भूरादिसप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिग-नुष्टुबवृहतीपंक्तित्रिष्टुबृजगत्यश्च्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यवृहस्पति-वरुणेन्द्रविश्वेदेवादेवताः, अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्रणायामे विनि-योगः ।

मन्त्र--

ॐभूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्, भर्गोदेवस्य धीमहि, धियोयोनः प्रचोदयात्, ओमापोज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् । ॐ सर्वेश्वराय नमः ।

भूत शुद्धिः--

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे ॥

मार्जनम्--

विनियोग--

ॐ आपोहिष्ठेति तिसृणां सिन्धुद्वीप ऋषिः आपोदेवता गायत्री छन्दः मार्जने विनियोगः ।

हाथ में जल लेकर शरीर के समस्त अंगों पर छिड़के ।

मन्त्र--

ॐ आपोहिष्ठामयो भुवः । ॐ तान ऊर्जेदधातनः । ॐ महेरणाय चक्षसे । ॐ योवः शिवतमोरसः । ॐ तस्य भाजयतेहनः । ॐ उशतीरिवमातरः । ॐ तस्माऽअरङ्गमामवः । ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ । ॐ आपोजनयथा च नः ।

अघमर्षण--

विनियोग--

ॐ द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिः आपोदेवता अनुष्टुप् छन्दः अघमर्षणे विनियोगः ।

इस विनियोग के पश्चात् हाथ में जल लेकर नासिका के अग्रभाग में लगाकर एक स्वांस में तीन बार अथवा एक ही बार नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ता हुआ यह स्मरण करता जाय कि हमारे वाम-कुक्षि में पाप पुरुष का वास है, उसे नासिका की राह से स्वांस द्वारा मन्त्र रूपी अग्नि से भस्म किया, इस भावना से नासिका की राह से स्वांस को छोड़ता हुआ जल को अपनी बायीं ओर छोड़ दे--

मन्त्र-ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नःस्नातोमलादिव।
पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ।।

सूर्योपस्थान--

विनियोग--

ॐ उद्वयमित्यस्य हिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप छन्दः सूर्योदेवता तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुर उष्णिक्छन्दः सूर्योदेवता ॐ उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्वऋषि-र्गायत्रीछन्दः सूर्योदेवता चित्रमित्यस्य कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता उपस्थाने विनियोगः ।

मन्त्र-- ॐ उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् ।
देवन्देवत्रा सूर्यमगन्मज्ज्योतिरुत्तमम् ।।

उदुत्यञ्जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ।

चित्रं देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुण-स्याग्ने । आप्राद्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा-जगतस्तस्थुषश्च ।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् । शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाःस्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।

गायत्री उपस्थान--

विनियोग--

तुरीयपादस्य विमल ऋषिः परमात्मा देवता
गायत्री छन्दः गायत्र्युपस्थाने विनियोगः ।

मन्त्र--

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्य-पद्यसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शिताय पदाय परोरजसे सावदो मा प्रापत् ।

ध्यानम्--

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवलच्छायैर्मखैस्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुनिवद्धरत्नमुकुटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम् ।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुश कशाः शुभ्रं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलां हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥

मन्त्र--

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

विसर्जन--

ॐ उत्तमे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतमस्तके ।
ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम् ।।

विनियोग--

ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्रीछन्दः अशेषपापक्षयार्थे जपे विनियोगः ।

जप निवेदन--

हाथ में जल लेकर--

ॐ कृतानेन जप निवेदनात्म कर्मणा भगवान् श्रीराधासर्वेश्वरः प्रीयताम् न मम ।। हरिः ॐ तत्सत् श्रीसर्वेश्वरार्पणमस्तु ।।

सूर्यार्घ्य--

एक चक्रोरथोयस्य दिव्यः कनकभूषितः ।
स मे भवतु सुप्रीतो पद्महस्तो दिवाकरः ।।
ॐ एहि सूर्यसहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकरः ।।

इन मन्त्रों से श्रीसूर्यदेव को तीन अर्घ्य प्रदान कर ७ परिक्रमा की भावना से नमस्कार करके दण्डवत् प्रणाम कर ले ।

मङ्गला

मङ्गलं भगवान् विष्णुः मङ्गलं गरुडध्वजः ।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षो मङ्गलायतनो हरिः ।।

सन्ध्यावन्दनादि कर्म के पश्चात् देवोभूत्वादेवं यजेत् के नियमानुसार जगमोहन में जाकर भगवान् श्रीहरि के मुख्य द्वार के सामने खड़े-खड़े ही प्रातःस्मरण अथवा मंगलमय श्रीराधाकृष्ण कृपा कटाक्ष स्तोत्र का पाठ कर फिर--

संमुखे बामपार्श्वे च समीपे गर्भमन्दिरे ।
जपहोमनमस्कारं न कुर्यात् केशवालये ।।

इस नियमानुसार भगवान् के दाहिनी ओर से भगवान् को साष्टांग दण्डवत्प्रणाम कर तदनन्तर घण्टानाद, शंखनाद किंवा तीन ताली बजाकर भगवान् का द्वार खोल, देहली को तीन बार नमस्कार कर पश्चात् दाहिने पैर को भीतर रखते हुए निज मन्दिर में प्रवेश करे । अथवा दाँयां-बाँयां स्वासानुसार भी जिस ओर का श्वाँस चलता हो उसी पैर को भीतर रख कर प्रवेश करें । फिर दोनों हाथ जोड़कर विनम्र भाव से निम्नलिखित मन्त्र द्वारा उत्थापन हेतु प्रभु की प्रार्थना करें ।

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
उत्तिष्ठ राधिकाकान्त दीनोद्धरणतत्परः ।।

इसके पश्चात् मुरली, लकुटी एवं अङ्गवस्त्र आदि को सिंहासन पर पधरा कर शय्या को उठाय यथा स्थान रख सिंहासन

को वस्त्र से स्वच्छ (साफ कर पूर्व दिन के पुष्पमाला आदि निर्माल्य प्रसादी पदार्थों को एकान्त में विसर्जन कर निज मन्दिर में सर्वत्र सोहनी (मार्जनी) सेवा के पश्चात् मन्दिर का आंगन कच्चा हो तो गोमय (गोबर) आदि से लीपकर और यदि पक्का हो तो जल से धोय वस्त्र से पोंछ कर शुद्ध मृत्तिका से मँजे हुये पूजा पात्रों को कूप-बावड़ी आदि के ताजा जल से धोय वस्त्र से जल छान कर भर लावे । फिर नूतन जल झारी भर सिंहासन पर पधराय श्रीप्रिया प्रियतम जू को मुख धुलाय, आचमन कराय वस्त्र से मुख पोंछ मंगला भोग में दूध किंवा बादाम, माखन मिश्री धराय तुलसी पधराय दो-चार मिनट पश्चात् आचमन कराय मुख पोंछ बंशी-लकुटी धारण कराय फिर एक-दो या तीन बत्तियों से मंगला आरती करना चाहिए ।

आरती--

मङ्गल कुञ्ज में मङ्गल आरती । मङ्गल रङ्ग रङ्गीली बारति ।।
मङ्गल मुख अरविन्द निहारति । मङ्गल मूल हिय में धारति ।।
मङ्गल सब सहचरि अनुसारति । मङ्गल मोद विविध विस्तारति ।।
मङ्गल चौंर लिये कर ढारति । मङ्गल मनसिज मन मनुहारति ।।
मङ्गल जय जय शब्द उच्चारति । मङ्गल श्रीहरिप्रिये विचारति ।।

आरती उतारने का नियम यह है कि-प्रथम[1] चार बार श्रीचरणों की, दो बार नाभि प्रदेश की, एक बार मुख मण्डल की,

---

१--आदौ चतुष्पादतलैक देशे द्विर्नाभिदेशे मुखमण्डलैकम् ।
सर्वाङ्गदेशेषु च सप्तवारं आरार्तिकं भक्तजनः प्रकुर्यात् ।।

फिर सात बार सर्वाङ्ग प्रदेश की । इस प्रकार चौदह बार घुमाकर आरती उतारना चाहिये । इसके पश्चात् निज मन्दिर के बाहर श्रीगरुडजी, श्रीहनुमान्जी एवं शिव पञ्चायतन तथा श्रीतुलसीजी का बिरवा (पौधा) आदि हो तो, वहीं से उनकी ओर मुख करके उनकी भी आरती उतार लेना चाहिये ।

तदनन्तर उतनी ही बार जलपूरित शंख से भी उसी प्रकार आरती कर लेना चाहिये पुनः आरती को नीचे रखकर उसके इधर-उधर अगल-बगल में थोड़ा-थोड़ा शंख का जल छोड़कर फिर शंख के जल को अपने शरीर पर तथा दर्शक भक्तजनों पर छिड़कना चाहिये । उसका फल--

शंख मध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि ।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहति ।।

इस प्रकार मंगला आरती के दर्शन का बहुत महत्वपूर्ण फल है ।

शृङ्गार

भक्तजनों को मंगला आरती के दर्शन कर लेने के पश्चात् निज मन्दिर के मुख्य द्वार पर टेरा (पर्दा) डालकर फिर केशर कपूर मिश्रित चन्दन घिसकर एक कटोरी में भर लेना चाहिये । तदनन्तर तुलसी, चन्दन, फल, पान, पुष्प एवं पुष्पमाला आदि पूजन सामग्री तथा उस दिन जो पोशाक (वस्त्र) आभूषण आदि

धारण कराने हों उन्हें भी यथा स्थान रखकर फिर भगवान् के सन्मुख किंवा दाहिनी ओर आसन बिछाकर बैठ जावे ।

पात्र स्थापन

अपने सन्मुख वाम भाग की ओर गन्धोदक से स्वस्तिक चिह्न बना के उस पर--कूर्माय नमः अनन्ताय नमः भूम्यै नमः इस प्रार्थना पूर्वक पुष्पादि समर्पण करके जल पूरित पूजा कलश को वहाँ स्थापित कर देना चाहिये । भगवान् के दाहिनी ओर अर्थात् कलश के समीप ही घृत का दीपक जलाकर एवं धूप अगरबत्ती आदि करके प्रार्थना करे--

भो दीप ! ब्रह्मरूप त्वं कर्मसाक्षीह्यविघ्नकृत् ।
यावत्पूजासमाप्तिःस्यात्तावत्त्वं सुस्थिरो भव ॥

फिर अपने पृष्ठ (पीछे के) भाग में हस्त प्रक्षालनार्थ (हाथ धोने के लिये) एक जल पात्र एवं हाथ पोंछने के लिये एक वस्त्र भी रखना आवश्यक है । कलश के समीप ही दक्षिण की ओर क्रमशः वर्तुल किंवा चतुष्कोण (गोल या चोकोर) चिह्न बनाकर उस पर गरुडघण्टा तथा षट्कोण चिह्न बनाके उस पर जल पूरित शंख स्थापित कर रखना चाहिये ।

तदनन्तर शंख के चारों दिशाओं में जैसे--दक्षिण की ओर प्रोक्षणीपात्र और उसके पास ही पाद्यपात्र (एक छोटी कटोरी) जिसमें श्यामाक, दूब, कमल और विष्णुकान्ता छोड़ दे । इसी प्रकार शंख के उत्तर की ओर अर्घ्यपात्र जिसमें चन्दन,

पुष्प अक्षत, यव, दर्भाग्रभाग, तिल, सरसों और दूब छोड़ दे । फिर शंख के पूर्व दिशा में आचमनीय पात्र जिसमें जायफल, लोंग, कंकोल और पीपल इन पदार्थों को छोड़ दे । तदनन्तर शंख के पश्चिम की ओर मधुपर्कपात्र जिसमें दही, शहद और घृत छोड़े । पूजा में ये सब पात्र पंचकटोरी के नाम से प्रसिद्ध हैं । यदि इन पात्रों में किसी पदार्थ का अभाव हो तो उसकी पूर्ति हेतु उनके स्थान पर तुलसी पत्र एवं चन्दन आदि छोड़कर पूर्ति कर लेना चाहिये । तत्पश्चात् इनके समीप ही तुलसीपत्र, पान, पुष्प एवं पुष्पमाला आदि को जल से प्रोक्षण कर धर ले और पास में वस्त्राभूषण आदि को संस्थापित कर लेना चाहिये ।

संकल्प--

फिर जल की आचमनी भर उसमें गंधाक्षत कर हरिः ॐ तत्सदद्यैतस्यादि समारभ्य वर्ष-अयन-ऋतु-मास-पक्ष-दिन नक्षत्रादि पर्यन्तं समुच्चार्य अमुक गोत्रोत्पन्नामुकनामाऽहं श्रीराधा-सर्वेश्वर प्रीतये कृतानुष्ठान कर्मणि प्रातः पूजायां मूलमन्त्रोच्चार-णादि सहितं कलश-घण्टा-शंख पात्रादि समर्चनं कृत्वा पीठ-पूजनं विधायाद्यष्टसखीजन श्रीसुदर्शनादि भगवत्पूजन पूर्वकं श्रीराधाकृष्णयोः युगलाचरणार्चनञ्च करिष्ये ।

श्रीहरिगुरुस्मरणम्--

तदेवलग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव राधापते तेंघ्रियुगं स्मरामि ॥

श्रीहसञ्च सनत्कुमारप्रभृतीन् वीणाधरं नारदं,
निम्बादित्यगुरूञ्च द्वादशगुरून् श्रीश्रीनिवासादिकान् ॥
वन्दे सुन्दरभट्टदेशिकमुखान् वस्विन्दुसंख्यायुतान् ।
श्रीव्यासाद्धरिमध्यगाच्च परतः सर्वान् गुरून् सादरम् ॥

कलश पूजन--

पुष्प हाथ में लेकर--

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संन्निधिं कुरु ॥
पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा ।
आगच्छन्तु मया प्रोक्ता पूजाकाले सदा मम ॥

अंकुश मुद्रा द्वारा उपर्युक्त समस्त तीर्थों का कलश के जल में आवाहन कर कलश के पूर्व की ओर **ऋग्वेदायनमः** दक्षिण की ओर **यजुर्वेदाय नमः** पश्चिम की ओर **सामवेदाय नमः** तथा उत्तर की ओर **अथर्ववेदाय नमः** और कलश के मध्य में **अपां पतये वं वरुणाय नमः** ऐसी प्रार्थना कर धेनुमुद्रा* द्वारा कलश का स्पर्श करते हुये समस्त तीर्थों की प्रार्थना करे ।

---

* **अंकुश मुद्रा और धेनु मुद्रा परिज्ञान**--दाहिने हाथ की अनामिका एवं कनिष्ठिका को हथेली की ओर मोड कर उन पर अंगूठा रखे फिर उसी प्रकार कुछ मध्यमा को भी मोड़कर तर्जनी को सीधी कर गोल चक्र लगाने का नाम अंकुश मुद्रा है ।

गंगा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा
कावेरी सरयू र्महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका ।
क्षिप्रा वेत्रवती महासुर नदी ख्याता गया गण्डकी
पूर्णा पूर्णशतै स्समुद्रतनया कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ।।

गरुड घण्टा पूजन--

कलशोदक से गरुड घण्टा को संप्रोक्षण कर फिर यथा स्थान रख निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

घंटा स्थित महाभाग भगवद्वाहनोत्तम ।
गरुडैहि कृपां कृत्वा विष्णु सेवां करोम्यहम् ।।
नागारि चिह्निता घंटा रथाङ्गेन समर्चिता ।
वादनात् कुरुते नाशं जन्ममृत्युभयस्य च ।।
स्नानार्चनक्रियाकाले घंटानादं करोति यः ।
कल्पकोटिसहस्राणि स वसेद्धरिमन्दिरे ।।
आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् ।
घंटानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घंटां प्रपूजयेत् ।।

तदनन्तर ॐ गजध्वनि मन्त्रमातः स्वाहा ऐसा बोलकर गन्ध पुष्पादि से पूजन कर नमस्कार करे ।

शङ्ख पूजन--

कलशोदक से शंख को परिपूर्ण कर हाथ में पुष्प लेकर निम्नलिखित श्लोकों द्वारा प्रार्थना करे ।

बाँये हाथ की अंगुलियों में दाहिने हाथ की अंगुलियाँ फँसाकर बायें हाथ की मध्यमा से दाहिने हाथ की तर्जनी तथा दाहिने हाथ की मध्यमा से बायें हाथ की तर्जनी इसी प्रकार बाँये हाथ की कनिष्ठिका से दाहिने हाथ की अनामिका और दाहिने हाथ की कनिष्ठिका से बायें हाथ की अनामिका मिलाने का नाम धेनुमुद्रा है । इसमें गाय के ४ थन बन जाते हैं, अतः इसे धेनुमुद्रा कहते हैं ।

पाञ्चजन्य महाभाग भगवद्धस्तशोभित ।
विष्णुसेवार्थमागच्छ शंखदेव नमोऽस्तुते ॥
त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ।
नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते ॥
शंखादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता ।
पृष्ठे प्रजापतिश्चैव अग्रे गंगा सरस्वती ॥
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया ।
शंखे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छङ्खं प्रपूजयेत् ॥

ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे, पावमानाय धीमहि, तन्नः शंखः प्रचोदयात् ।

फिर शंखमुद्रा * दिखाते हुये ॐ क्लीं महाजलचराय हुँ फट् स्वाहा यह मन्त्र बोलकर ॐ भूर्भुवः स्वः शंखस्थदेव-

* शंखमुद्रा परिज्ञान--बाँये हाथ की हथेली में दाहिने हाथ का अंगूठा रख कर मुट्ठी लगा लीजिये और दाहिने हाथ की समस्त अंगुलियों को सीधी रखकर बांये हाथ के अंगूठे से लगा लीजिये शंख मुद्रा बन जायेगी ।

तायै नमः आवहयामि सर्वोपचारार्थे गन्ध पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ऐसा बोलकर गन्ध पुष्पादि से पूजन कर नमस्कार करे ।

पार्षद पूजा--

सुदर्शनचक्र, पाञ्चजन्यशंख, कौमोदकीगदा, पद्म, खड्ग, बाण, धनुष, हल और मूसल भगवत्प्रिय इन आठ आयुधों का आवाहन, आठों दिशाओं में इनकी स्थापना करे । इसी प्रकार नन्द, सुनन्द, प्रचण्ड, चण्ड, महावल, बल, कुमुद और कुमुदेक्षण इन आठ पार्षदों का भी आठों दिशाओं में ध्यान कर स्थापना करे । सामने श्रीगरुडजी ओर चारों कोणो में दुर्गा, विनायक, व्यास और विष्वक्सेनजी की स्थापना करे । तदुपरान्त सामने ही श्रीगुरुदेव की और यथाक्रम आठों दिशाओं में इन्द्रादि लोकपालों की भी स्थापना कर प्रोक्षण, अर्घ्यदानादि एवं गंधाक्षतादि से पूजन करे ।

तदनन्तर स्नान चोकी पर स्नान पात्र (ताम्बे का तस्टा) रखकर उसके मध्य में चन्दन से षट्कोण बना मध्य में **क्लीं** यह बीज मन्त्र लिखकर ऊपर बारीक स्वच्छ वस्त्र बिछाकर तुलसीदल पधरावे पुनश्च श्रीरङ्ग्व्यादि भगवत्सेवापरायण आठ सखियों की अपने--अपने अधिकारानुसार सेवा सामग्री लिये हुये श्रीप्रियाप्रियतम की सेवा में संलग्न हैं ऐसी भावना से प्रार्थना करे ।

श्रीरङ्गादिसुदेविका च ललिता वैशाखिका चम्पिका
चित्रा तुङ्गसखीन्दुलेखिकपरा चाष्टौ प्रधानप्रियाः ।
अन्याः सन्ति मनोहराः प्रियतमा नित्यं नवीनायिता
वन्दे त्वच्चरणारविन्दमनिशं दासोऽस्म्यहं श्रद्धया ॥

फिर श्रीविग्रह यदि अचल हो तब तो वहीं पर स्नानादि करवावें और अन्य श्रीविग्रहों को स्नान चौकी पर पधरावें और यदि प्रधान श्रीविग्रह भी चल हो तब प्रियाप्रियतम सहित सभी श्रीविग्रह का सिंहासन से स्नान चौकी पर स्नानार्थ आवाहन करे ।

(ध्यान रहे प्रतिष्ठित श्रीविग्रह एवं शालग्राम श्रीविग्रह की सेवा में आवाहन और विसर्जन नहीं होता । आवाहन और विसर्जन के स्थान पर केवल उस मन्त्र द्वारा सिंहासन से स्नान चौकी पर स्नानार्थ पधारने की प्रार्थना मात्र है ।)

(वैदिक, पौराणिक और तान्त्रिक पूजा के तीन प्रभेद हैं । हमने यहाँ सर्वसाधारण पूजक वर्ग के लिये पौराणिक एवं तान्त्रिक पद्धति का देना ही उचित समझा है--जो सरल होने के कारण सभी के उपयोग में आ सके ।)

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर श्रीप्रियाप्रियतम युगल सरकार का ध्यान करते हुये प्रार्थना करे--

स्वभावतोऽपास्तसमस्तदोषमशेषकल्याणगुणैकराशिम् ।
व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम्

अङ्केतु वामे वृषभानुजां मुदा
विराजमानामनुरूपसौभगाम् ।
सखीसहस्रैः परिसेवितां सदा
स्मरेम देवीं सकलेष्ट कामदाम् ।।

आवाहन--

आगच्छ देवदेवेश श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम ।
राधिकासहितश्चात्र गृहाण पूजनं मम ।।

अष्टादशाक्षर श्रीगोपाल मन्त्र को पढ़कर श्रीराधा-कृष्णाभ्यां नमः, सिंहासनात् स्नानार्थं स्नान पट्टोपरि आवाहनं समर्पयामि ।

आसन--

नानारत्नसमायुक्तं कार्तस्वरविभूषितम् ।
आसनं देवदेवेश गृहाण पुरुषोत्तम ।।

श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण कर श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः इदमासनं समर्पयामि । ऐसा कहकर आसन बिछावे ।

पाद्यम्--

गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम् ।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः पाद्यं समर्पयामि ऐसा बोलकर श्रीचरणारविन्द में पाद्यपात्र का जल छोड़े ।

अर्घ्यम्--

नन्दगोपगृहे जातो गोपिकानन्दहेतवे ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं राधया सहितो हरे ।।

श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः अर्घ्यं समर्पयामि ऐसा बोलकर अर्घ्यपात्र का जल हस्तकमल पर छोड़े ।

आचमनम्--

यामुनं जलमानीतं सुवर्णकलशस्थितम् ।
आचम्यतां हृषीकेश पुराणपुरुषोत्तम ।।

श्रीगोपाल मन्त्र बोलकर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः आचमनीयं समर्पयामि ऐसा उच्चारण कर आचमन पात्र का जल छोड़ दे ।

मधुपर्क--

नमः श्रीवासुदेवाय तत्त्वज्ञानस्वरूपिणे ।
मधुपर्कं गृहाणेमं राधिकापतये नमः ।।

श्रीगोपाल मन्त्र पढ़कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः मधुपर्कं समर्पयामि ऐसा बोल कर मुख की ओर मधुपर्कावलोकन करा दे । तत्पश्चात् पुनराचमनं समर्पयामि ।

स्नानम्--

गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः ।
स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे ।।

श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः स्नानं समर्पयामि ऐसा बोलकर शंखोदक से स्नान करावे ।

पञ्चामृत स्नानम्--

पयोदधिघृतं गव्यं माक्षिकं शर्करायुतम् ।
गृहाणेमानि द्रव्याणि राधिकानंददायक ।।

श्रीगोपाल मन्त्र बोल कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि ऐसा बोलकर पंचामृत स्नान करावे । पुनः शुद्धोदक स्नान कराके--**सहस्रशीर्षेति** इन सोलह मन्त्रों से अभिषेक करे ।

अभिषेक के पश्चात् श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण करते हुये श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः अङ्गवस्त्रं समर्पयामि ऐसा बोलकर अङ्ग वस्त्र करे अर्थात् श्रीअङ्ग को वस्त्र से पोंछे और अधो वस्त्र (धोती) धारण करावे ।

यज्ञोपवीतम्--

दामोदर नमस्तेस्तु त्राहि मां भवसागरात् ।
ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाण पुरुषोत्तम ।।

श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं यह मन्त्र पढ़ते हुये श्रीयज्ञोपवीतं समर्पयामि ऐसा बोलकर यज्ञोपवीत धारण करावे ।

वस्त्रम्--

पीताम्बर युगं देव सर्वकामार्थसिद्धये ।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण सुरसत्तम ।।

श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः वस्त्रं समर्पयामि यह बोलकर वस्त्राभूषण धारण करावे ।

चन्दनम्--

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ।।

श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः चन्दनं समर्पयामि ऐसा कहते हुये चन्दन धारण करावे अर्थात् श्रीप्रियाप्रियतम के स्वसम्प्रदायानुसार तिलक स्वरूप धारण करावे ।

पुष्पमाला--

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयाहृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ।।

श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः पुष्पमालां समर्पयामि ऐसा बोलकर पुष्पमाला धारण करावे ।

इत्र--

तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च ।
मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण जगदीश्वर ।।

श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे यह मन्त्र भी बोलते हुये इत्राख्यं सुगन्धीद्रव्यं समर्पयामि । यहाँ केवल इत्र ही धारण करावे । यदि सुगन्धित तेल से श्रीअंग पर लेपन करना हो तो स्नान कराने के पूर्व ही करना चाहिये ।

तुलसीदलम्--

तुलसीं हेमरूपाञ्च रत्नरूपाञ्च मञ्जरीम् ।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ।।

श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः श्रीतुलसीदलं समर्पयामि ऐसा बोल कर तुलसीदल धारण करावे ।

नैवेद्यम् (शृङ्गार भोग)--

नैवेद्यं गृह्यतां देव राधया सहितः प्रभो ।
इप्सितं परमां नित्यं भक्तिं देहि दयानिधे ।।

श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः नैवेद्यं समर्पयामि ऐसा बोलकर तुलसी पत्र छोड़ कर नैवेद्य अर्पण करे (शृङ्गार भोग में मगद के लड्डू अथवा दही-पूड़ी एवं शक्कर-पारे आदि होने चाहिये) ।

दोहा--

प्रेम पुलकि अंग-अंग में, देत हेतु जुत कौर ।
भोग सिंगार अरोगहि, सुकुंवारन सिरमोर ।।

पद--

बैठे दोउ सुकुंवार सिरोमनि
आरोगत है भोग सिंगार ।
चाँमीकर चौकी पर सुन्दरी
आनि धर्‌यो सहचरि भरि थार ।।

आदर सहित देत कर कौरनि
कमल वदन करि-करि मनुहार ।
श्रीहरिप्रिया प्रसंसि परसपर
प्रेम पुलकि अंग-अंग अपार ॥

पान बीड़ा--

पूगीफलसमायुक्तं एलालवंगसंयुतम् ।
भक्त्या दत्तं मया देव ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ताम्बूलं समर्पयामि ऐसा बोलकर पान बीड़ा समर्पण करे ।

आचमन--

दोहा--

अँचवन अँचवावति बियें, हितु हिये हुलसाय ।
रोरी तिलक रचावहीं, बीरी भोग लगाय ॥

पद--

लै झारी अँचवन अँचवावति ।
हितू सहेली हित की चित की
समझि-समझि हियरें हुलसावति ।
दे मुख वासु विशाखा बीरी
लै लै ललिता भोग लगावति ।
श्रीहरिप्रिया तिलक मस्तक रचि
नीराजनि की सौंज सजावति ॥

तदनन्तर वेणवे नमः, लकुट्यै नमः ऐसा बोलकर बंशी एवं लकुटी को नमस्कार कर भगवान् श्रीहरि के कर कमलों में धारण करावे ।

शारदेन्दीवरश्यामं त्रिभंगलसिताकृतिम् ।
निराजयामि देवेश राधया सहितं हरिम् ।।

श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः निराजनं समर्पयामि ऐसा बोलकर आरती उतारे ।

शृङ्गार आरती--

बंशी लकुटी धराय, दर्पण दिखाय तीन या पाँच बत्तीन सो शृङ्गार आरती उतारे ।

आरती--

मूरतिमान सिंगार सहचरि,
सजि लाई आरति सिंगार की ।
आनि दई कर अग्रवर्त्ति के,
कहा कहौं शोभा कनक थार की ।।
अद्भुत रीति उतारति वारति,
निरखि सुछवि विविवर उदार की ।
श्रीहरिप्रिया पुलक अँग-अँग में,
बाढी उर उमँगनि विहार की ।।

मन्त्र पुष्पाञ्जलिम्--

यज्ञेश्वराय देवाय तथा यज्ञोद्भवाय च ।
यज्ञानां पतये नाथ गोविन्दाय नमो नमः ।।

श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि ऐसा बोलकर मन्त्र पुष्पांजलि समर्पण करे।

नमस्कार--

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोदानक्रियादिषु।
न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

श्रीगोपाल मन्त्र का उच्चारण कर-श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः नमस्कारं समर्पयामि ऐसा बोलकर साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करे।

तदनन्तर श्रीकृष्णपाद तीर्थाय नमः ऐसा बोलकर चरणोदक पात्र का अभ्यर्चन कर मस्तक पर धारण कर फिर आधार पात्र में स्थापन करे ।

बलिर्विभीषणो भीष्मः कपिलोनारदोऽर्जुनः ।
प्रह्लादश्चाम्बरीषश्च वसुर्वायुसुतः शिवः ॥
विष्वक्सेनो द्धवोऽक्रूरः सनकाद्याः शुकादयः।
आयान्तु वैष्णवाः सर्वे दीनोद्धरणतत्पराः ॥

इन वैष्णवजनों का आवाहन कर उनको चरणोदक दे ।

तत्पश्चात्--

देव-देव जगन्नाथ शंख-चक्रगदाधर ।
देहि कृष्ण ममानुज्ञां तव तीर्थनिषेवणे ॥

ऐसी प्रार्थना कर--

इदं पवित्रस्य परं पवित्रं रसायनं चापि रसायनानाम् ।
दरिद्रता दुष्कृत दुःख हारि पिबामि ते पादसरोजतीर्थम् ।।
प्रथमं कायशुद्ध्यर्थं द्वितीयं धर्मसाधनम् ।
तृतीयं मोक्षदं प्रोक्तं त्रिधा तीर्थजलं पिबेत् ।।
अकालमृत्युहरणं सर्वपापविनाशनम् ।
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ।।

ऐसा बोलते हुये स्वयं चरणामृत ग्रहण करे एवं भक्तजनों को प्रदान करे ।

श्रृङ्गार आरती के पश्चात् गीता, रामायण, भागवत, गोपाल-विष्णु सहस्रनाम प्रभृति स्तोत्र पाठ तुलसी पूजन एवं श्रीमन्त्रराज जप तथा गोसेवा आदि धार्मिक कृत्यों का करना भी परमावश्यक है ।

तुलसी नमस्कार मन्त्र--

या दृष्टा निखिलाघसंघशमनी स्पृष्टा वपुः पावनी
रोगाणामभिवन्दितानिरशनी सिक्तान्तकत्रासिनी ।।
प्रत्यासत्यविधायिनी भगवतः कृष्णस्य संरोपिता
न्यस्तात्तच्चरणे विमुक्ति फलदा तस्यै तुलस्यै नमः ।।
वृन्दायै तुलसी देव्यै प्रियायै केशवस्य च ।
विष्णुभक्तिप्रदे देव्यै सत्यवत्यै नमोनमः ।।

तुलसी पर जल चढ़ाने का मन्त्र--

गोविन्दवल्लभां देवीं भक्तचैतन्यकारिणीम् ।
स्नापयामि जगद्धात्रीं विष्णुभक्तिप्रदायिनीम् ।।

तुलसी उतारने का मन्त्र--

तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिये ।
केशवार्थे चिनोमि त्वां वरदा भव शोभने ।।

तुलसी समर्पण का मन्त्र--

तुलसीं हेमरूपाञ्च रत्नरूपाञ्च मञ्जरीम् ।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ।।

तुलसी कौन-कौन दिन नहीं उतारे--

रविवारे च संक्रान्तौ द्वादश्यां श्राद्धवासरे ।
तुलसीं नो विचिन्वन्ति ह्यमायां पूर्णिमादिने ।।

रविवार, संक्रान्ति, द्वादशी, श्राद्ध के दिन में तथा अमावस्या और पूर्णिमा को तुलसी नहीं उतारना चाहिये ।

वनमाला--

तुलसीकुन्दमन्दारपारिजातसरोरुहैः ।
पञ्चभिर्ग्रथिता माला वनमाला प्रकीर्तिता ।।

अथवा--

पत्र-पुष्पमयी माला वनमाला प्रकीर्तिता ।

तथा च--

आपादलम्बिनी माला वनमाला प्रकीर्तिता ।

वैजयन्ती माला--

वेणुसुक्तिकवाराहगजारिव्यालसम्भवैः ।
षड्भिः षड्भिः क्रमात् प्रोक्ता मणिभि वैंजयन्तिका ॥

गोपाल गायत्री

करन्यास--

ॐ गोपालाय अंगुष्ठाभ्यां नमः
विद्महे -- तर्जनीभ्यां नमः
गोपीजनवल्लभाय--मध्यमाभ्यां नमः
धीमहि-- अनामिकाभ्यां नमः
तन्नः कृष्णः-- कनिष्ठिकाभ्यां नमः
प्रचोदयात्-- करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिन्यास--

ॐ गोपालाय -- हृदयाय नमः
विद्महे -- शिरसे स्वाहा
गोपीजनवल्लभाय -- शिखायैवषट्
धीमहि -- कवचाय हुम्
तन्नः कृष्णः -- नेत्रत्रयाय वौषट्
प्रचोदयात् -- अस्त्राय फट्

गायत्री आवाहन--

आगच्छ वरदे देवि त्रिपदे कृष्णवादिनी ।
गायत्री छन्दसां मातः कृष्णयोनि नमोस्तुते ॥

गोपाल-गायत्री मन्त्र--

ॐ गोपालाय विद्महे, गोपीजनवल्लभाय धीमहि,
तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ।

विसर्जन--

उत्तमे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमूर्धनि ।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथा सुखम् ।।

सूर्यार्घ्य प्रदान--

ध्येयः सदासवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान्किरीटी
हारीहिरणमय वपुर्धृतशंखचक्रः ।।

प्रार्थना--

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ।।

मुकुन्द मन्त्र जप विधिः

विनियोग--

ॐ अस्य श्रीमुकुन्द शरणागति मन्त्रस्य श्रीनारद ऋृषिः । गायत्री छन्दः । श्रीमुकुन्दः परमात्मा देवता । श्रीं बीजम् । रमा देवी शक्तिः प्रपदनं कीलकम् । श्रीभगवदनूशासनपालने विनियोगः ।

श्रीनारद ऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे । श्रीमुकुन्दपरमात्म देवतायै नमो हृदि । प्रपदनं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यास--

श्रीमद् अंगुष्ठाभ्यां नमः । मुकुन्दचरणौ तर्जनी-भ्यां नमः । सदा मध्यमाभ्यां नमः । शरणं अनामिका-भ्यां नमः । अहं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । प्रपद्ये करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः ।

अङ्गन्यास--

श्रीमद् हृदयाय नमः । मुकुन्दचरणौ शिरसे स्वाहा । सदा शिखायै वषट् । शरणं कवचाय हुंम् । अहं नेत्राभ्यां वौषट् । प्रपद्ये अस्त्राय फट् ।

पदन्यास--

श्रीमन्मुकुन्दचरणौ नमो मस्तके । सदा नमोवक्त्रे शरणं नमो हृदि । अहं नमो नाभौ । प्रपद्ये नमो गुह्ये ।

अवरोहन्यास--

प्रंपद्ये इति गुह्ये । अहं इतिनाभौ । शरणं इति हृदि । सदेति वक्त्रे । श्रीमन्मुकुन्दचरणौ इति मस्तके ।

वर्णन्यास--

श्रीं मस्तके । मं ललाटे । मुं भ्रूमध्ये । कुं दक्षिण कर्णे । दं वामकर्णे । चं दक्षिण नेत्रे । रं वाम नेत्रे । णौं दक्षिण नासायाम् । सं वामनासायाम् । दां मुखे । शं

कण्ठे । रं हृदि । णं नाभौ । मं दक्षिण कुक्षौ । हं वाम कुक्षौ । प्रं गुह्ये । पं जानुनोः । द्यें पादयोः ।

ध्यानम्--

श्यामावदातं करुणार्द्रनेत्रं
प्रसन्नवक्त्रं स्वजनैकजीवनम् ।
श्रीवत्सचिह्नं गलकौस्तुभं भजे
श्रीमन्मुकुन्दं प्रणतार्तिनाशकम् ॥

श्रीमुकुन्द मन्त्र--

श्रीमन्मुकुन्दचरणौ सदाशरणमहं प्रपद्ये ।

इस प्रकार ध्यान करते हुये धेनुमुद्रा दिखाते हुये यथाशक्ति जप करें ।

श्रीगोपाल मन्त्र जप विधिः

विनियोग--

ॐ अस्य श्रीगोपालाष्टादशाक्षर-मन्त्रस्य, श्रीनारद ऋषिरनुष्टुप्च्छन्दः, श्रीकृष्ण-परमात्मा-देवता, क्लीं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, ह्रीं कीलकम् । श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

नारद ऋषये नमः (शिरसि) गायत्रीछन्दसे नमः (मुखे) श्रीकृष्णदेवतायै नमः (हृदि) क्लीं बीजाय नमः (गुह्ये) स्वाहा शक्तये नमः (पादयोः) ह्रीं कीलकाय नमः (सर्वाङ्गे) ।

करन्यास--

क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः । कृष्णाय तर्जनीभ्यां नमः । गोविन्दाय मध्यमाभ्यां नमः । गोपीजन अनामिकाभ्यां नमः । वल्लभाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ।

अङ्गन्यास--

क्लीं हृदयाय नमः । कृष्णाय शिरसे स्वाहा । गोविन्दाय शिखायै वषट् । गोपीजन कवचाय हुंम् । वल्लभाय नेत्रत्रयाय वौषट् । स्वाहा अस्त्राय फट् ।

पदन्यास--

क्लीं नमोमूर्ध्नि । कृष्णाय नमो वक्त्रे । गोविन्दाय नमो हृदि । गोपीजनवल्लभाय नमो नाभौ । स्वाहा नमः पादयोः ।

वर्णन्यास--

क्लीं शिरसि । कृं ललाटे । ष्णां भ्रूवोः । यं नेत्रयोः । गों कर्णयोः । विं घ्राणयोः । दां मुखे । यं कण्ठे । गों स्कन्धयोः । पीं हृदि । जं उदरे । नं नाभौ । वं गुह्ये । ल्लं आधारे । भां कट्याम् । यं उर्वोः । स्वां जानुनोः । हां पादयोः ।

इस प्रकार उपर्युक्त पाँचों न्यास करके पद्मासन लगाकर मेरु दण्ड को सीधा रखते हुये दृष्टि को नासिका के अग्रभाग पर जमाकर तुलसी की माला से हाथ को हृदय के पास रखते हुये

तथा मन में युगल सरकार श्रीराधासर्वेश्वर श्रीकृष्ण का ध्यान करते हुये यथा शक्ति जप करे ।

श्रीगोपाल मन्त्र--

क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ।

जप के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा अपने किये हुये जप को भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर के अर्पण करे ।

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः ॥

वैष्णव वन्दना--

कविर्हरिरन्तरिक्षः प्रबुद्धः पिप्पलायनः ।
आविर्होत्रोऽथ द्रुमिलश्चमसः करभाजनः ॥
प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीक-
व्यासाम्बरीषशुकशौनकभीष्मदाल्भ्यान् ।
रुक्माङ्गदार्जुनवशिष्ठविभीषणादी-
न्पुण्यानिमान्परमभागवतान्नमामि ॥
वाच्छाकल्पतरुभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च ।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमोनमः ॥

राजभोग--

(ग्रीष्मकाल में दिन के ११ बजे और शीतकाल में १२ बजे प्रायः राजभोग हो ही जाना चाहिये । उत्सव-महोत्सवों पर समय का प्रतिबन्ध नहीं, उस समय विलम्ब होना स्वाभाविक बात है ।)

राजभोग तैयार हो जाने पर मन्दिर में टेरा (पर्दा) लगाकर सर्व प्रथम वंशी-लकुटी माला तथा शालग्राम श्रीविग्रह पर अर्पण की हुई तुलसी दल आदि विसर्जन कर चौकी लगाकर उसे जल प्रक्षालित कर वस्त्र से पोंछ लेना चाहिये । यदि सामग्री कच्ची-पक्की दोनों ही प्रकार की हो तो, दो चौकी लगाना चाहिये। ऐसी स्थिति में रसोई घर से निज मन्दिर तक जल का छींटा लगाकर थाल पधराना चाहिये । फिर हाथ में तुलसी एवं जल लेकर बायें हाथ से ढांक मूल मन्त्र का जप करते हुये थाल के चारों ओर छोड़े । थाल में ताजा तुलसी पत्र पधराये फिर धेनु-मुद्रा दिखाकर शंखस्थ जल को भोजन सामग्री पर छिड़क प्रभु को प्रथम आचमन कराय धूप-दीप आरती कर हाथ जोड़ अमृतो-पस्तरणमसि बोलते हुये ग्रासमुद्रा प्राणायस्वाहा-कनिष्ठिका, अनामिका और अंगूठा मिलावे । अपानाय स्वाहा-अनामिका मध्यमा और अंगूठा मिलावे । व्यानाय स्वाहा-मध्यमा, तर्जनी और अंगूठा मिलावे । उदानाय स्वाहा तर्जनी, मध्यमा और अंगूठा मिलावे । समानाय स्वाहा-तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठिका तथा अंगूठा सभी को मिलावे पुनः घंटानाद कर भोजन आरोगने के लिये प्रार्थना कर जलपात्र पास में पधराय बाहर आकर बैठ जावे और भोजन का पद बोले--

पद-- **भोजन करत लाडली लाल ।**
रतन जटित कंचन चौकी पर
आनि धर्‌यो सहचरि भर थाल ।।

छप्पन भोग छतीसों षट्रस
लेह्य चोष्य भक्ष्य भोज्य रसाल ॥
जेंवत जाय सराय सरस अति
परसत रंग रंगीली बाल ॥
जे जे व्यंजन कर पलवनि ते
छुवति छबीली छइ छबि जाल ॥
ते ते व्यंजन ताहि ठौरते
लेत छबीलो होत निहाल ॥
यहि विधि राजभोग आरोगत
सुख संभोगत नैन विशाल ॥
श्रीहरिप्रिया परस्पर दोऊ
परम प्रवीन प्रेम प्रतिपाल ॥

फिर कम से कम आधा घण्टा (सवाघड़ी) बाद ताली बजाय भीतर जाकर जल आरोगाय आचमन करावे ।

आचमन को पद--

अचवन करत लाडली लाल ।
कंचन झारी गहत परस्पर
श्रीराधे गोपाल ॥
जल मुख लेतहि हँसत हँसावत
देखत सखिन के जाल ॥
राधामाधव केलि करत भयें
श्रीभट्ट परत विचाल ॥

फिर करोद्वर्तन कराय वस्त्र सों हाथ मुख पोंछ पानबीरी आरोगावे। तत्पश्चात् नूतन जल झारी भर खंड-पाट--चोपड-पासा आदि धराय दर्पण दिखाय राजभोग आरती उतारना चाहिये।

आरती--

दोहा--

अँचवन कर श्रीहरिप्रिया, बीरी मुख में लीनि।
हिंतु प्रमोद भरि मोद सों, तिहि छिन आरति कीनि॥

आरती का पद--

अँचवन करि आरोगे बीरी।
हित प्रमोदिका आरती कीरी॥
निरखि निरखि छवि नैंननि नीरी।
भई सखियन की अँखियाँ सीरी॥
मुदित महामन मोद मतीरी।
जय जय उचरति धरत न धीरी॥
श्रीहरिप्रिया जोरी नवलीरी।
अलबेली अरु लाड लडीरी॥

तदनन्तर मन्त्र पुष्पाञ्जलि देकर प्रार्थना करे। पुनः बगल में शय्या बिछाय पास में जल झारी पधराय आगे मांगते हुए टेरा (पर्दा) कर प्रणाम करते हुये पट मंगल कर देना चाहिये। तत्पश्चात्--

सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः ।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ॥

इस मन्त्र से गोग्रास निकाल अतिथि सत्कार (वैष्णव सेवा) आदि से निवृत हो प्रसाद पाना चाहिये ।

उत्थापन एवं सायंकालीन सेवा

श्रीमहावाणीजी का वचन है कि-घरी चार दिन रह्यो जानि के सहचरि आनि जगावे । श्रीहरिप्रिया सुखद सेज्याते सुमनासन पधरावे । अतः शौच स्नानादि से निवृत हो, तिलक-स्वरूप सन्ध्यावन्दनादि कर ४ घड़ी दिन रहे तब पूर्व (मंगला) के भाँति ही जगमोहन में जाकर दाहिनी ओर से भगवान् को दण्डवत् प्रणामादि कर तीन ताली बजाय श्रीगोपाल मन्त्र का जप करते हुये मन्दिर खोल घंटनाद करते हुये उत्थापन को ध्यान कर श्रीप्रियाप्रियतम को जगाने की भावना कर शय्या से सिंहासन पर पधरावे । तदनन्तर आचमन कराय मुख पुँछावें तथा धूपबत्ती कर ऋतु अनुसार फलादिक उत्थापन भोग धरे । फिर टेरा (पर्दा) करके बाहर बैठ ५ मिनट जप कर पुनः टेरा हटाय आचमन कराय मुख अंगुछाय बिरी-पान अर्पण करे । तत्पश्चात् वन विहार की भावना करे । अर्थात् सघन द्रुमलतावलीयुक्त पुष्पान्वित वाटिका में श्रीप्रियाप्रियतम विहार करने पधार रहे हैं, ऐसी भावना करते हुये भगवद् भजन करे ।

तदुपरान्त सायंकाल होने पर वन विहार से प्रभु के पधारने की प्रार्थना करे । दीपक प्रकाश करे । तब यह मन्त्र बोले--

दीपोज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिः जनार्दनः ।
दीपो हरतु मे पापं सन्ध्या दीप नमोऽतु ते ॥
शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुख सम्पदाम् ।
मम बुद्धिप्रकाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

तत्पश्चात् ३-४ या ५ बत्तियों से भगवान् की आरती उतारे ।

दोहा--

अंग अंग रस रंग में, रली अली अलबेलि ।
आरती जानि दुहून की, आरति करति सहेलि ॥
सन्ध्या आरति करति सहेली ।
श्यामा श्याम गुन गर्व गहेली ॥
निरखि निरखि छवि नैंन नवेली ।
अंग अंग रंग रली अलबेली ॥
सोहति उर चौसर चंबेली ।
रस रंजन राजति रति रेली ॥
तरु सिंगार प्रेम की बेली ।
श्रीहरिप्रिया हरत मन हेली ॥

तदनन्तर स्तुति, प्रदक्षिणा प्रणामादि के बाद यथावकाश कीर्तन, पदगायन, भजन आदिक नियमानुसार करे ।

शयन सेवा--

पाँच या छः घड़ी रात्रि बीतने पर टेरा (पर्दा) करके शृङ्गार बडा करे । फिर प्रभु के शयन भोग धरे । जल प्रोक्षण आदि से सभी क्रिया राजभोगवत् करके बाहर आवे । भोग के पद का गान करे ।

भोग का पद--

दोहा--

गरस परसपर देत मुख, सरस पुलक अंग अंग ।
जिय ज्यारी व्यारी करत, पिय प्यारी के संग ।।

करत वियारी पिय प्यारी सँग ।
अरस परस गरसा मुख देत दिवावत
अति उपजावत रति रँग ।।
मधुर दूध संमिलित मिश्री भरि
कनक कटोरें पीवत सोमँग ।
श्रीहरिप्रिया आरोगत रुचि सों
विविध पान पकवान पुलक अँग ।।

आचमन--

दोहा-

अंबुज वदनी सहचरी, विधि अँचवन अँचवाहि ।
बीरी रचि रचि देत कर, जुगलचन्द मुख चाहि ।।

अंबु अँचवावति अंबुज वदनी ।
कर लियें झारी कनक कटोरनि,
भरि-भरि प्यावति अंबुज वदनी ॥
रचि रचि बीरी देत दोउन कर,
उर उमगावति अंबुज वदनी ।
श्रीहरिप्रिया चखि चाहि चकित रहि,
कहि नहिं आवति अंबुज वदनी ॥

आचमन, मुख पोंछ बीरी अर्पण के अनन्तर आरती करे।

आरती--

दोहा--

**निज इच्छा अनुसारनी, निज सहचरि मृग नैंनि ।
सारति वारति आरती, समझि सैन की सैंनि ॥**

आरती वारति अलि मृग नैंनी ।
निज सहचरि इच्छा अनुसारनि,
समझि सैंन की सैना बैंनी ॥
जगमग ज्योति जगति दीपावलि,
कनक थार मधि सचित सुचैंनी ।
श्रीहरिप्रिया हितवाय हियनि में,
लै बलाय सनमुख सुख दैंनी ॥

क्षमा याचना के अनन्तर शय्या हो तो शय्या बिछावे । गद्दा, तकिया, चद्दर आदि सब सजा के यदि चल और सूक्ष्म श्रीविग्रह हो तो शय्या पर पौढावे और यदि अचल तथा बड़े श्री-

विग्रह हो तो शय्या पर शयन की भावना करे । वस्त्र, मुरली, लकुटी आदि शय्या पर तकिया के पास पधरावे । गरम या शीत वस्तु की सामग्री साधन ऋतु अनुकूल करे । नूतन जल की झारी भर कर पास में रखे । फिर हाथ जोड़ आज्ञा माँग दीपक मंगल कर पट मंगल कर दे ।

उत्सव -- महोत्सव

१. चैत्र शुक्ला प्रतिपदा नवीन सम्वत्सर-इस दिन विशेषाभिषेक, नूतन पोशाक, विशेष भोग, मिश्री-कालीमिर्चयुत नव-निम्बदलार्पण, भगवान् को नवीन पंचांग श्रवण कराना इत्यादि।

२. चैत्र शुक्ला नवमी-श्रीराम जन्मोत्सव, इस दिन मध्याह्न में १२ बजे पञ्चामृताभिषेक, नूतन पोशाक, विशेष भोग, मध्याह्न में उत्सव आरती, पञ्चामृत तथा धनिया की पंजीरी का भक्तों को प्रसाद वितरण । बधाई के पद तथा कीर्तन आदि ।

३. वैशाख शुक्ल तृतीया-अक्षय तृतीया, इस दिन अभिषेक, मलमल की श्वेत पोशाक, मध्याह्न में उत्सव आरती, भीगी हुई चने की दाल, मिश्री, सत्तू, ककड़ी, तरबूज आदि का भोग, शीतल जल की झारी पंखा आदि की सेवा । चन्दन का शृङ्गार ।

४. वैशाख शुक्ल चतुर्दशी-श्रीनृसिंह जयन्ती, नृसिंह स्वरूप का शृङ्गार, विशेष भोग, मध्याह्न में उत्सव आरती ।

५. ज्येष्ठ कृष्णा प्रतिपदा से पूर्णिमा पर्यन्त नित्यप्रति राजभोग के पश्चात् भगवान् का शीतल सुवासित सुन्दर जल शय्या पर शयन एवं पूर्णिमा को ज्येष्ठाभिषेक ।

६. आषाढ़ शुक्ल द्वितीया-रथयात्रा, इस दिन श्रीयुगल शृङ्गार कर सायंकाल रथ में विराजमान कर सुन्दर झाँकी के दर्शन। भोग में चने की भीगी हुई दाल तथा आम-जामून आदि के फल।

७. आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा-श्रीगुरु पूर्णिमा, आज के दिन प्रातः शृङ्गार आरती के पश्चात् श्रीहँस भगवान् से लेकर वर्तमान श्रीनिम्बार्काचार्य एवं अपने श्रीगुरुदेव का पूजन व आरती तथा प्रसाद वितरण ।

८. श्रावण शुक्ल तृतीया-झूलनोत्सव, इस दिन से लेकर नित्यप्रति सायंकाल नित्य नये शृङ्गारमय सुसज्जित झूलों में विराजमान श्रीप्रियाप्रियतम के झूलते हुए दर्शन ।

९. भाद्रपद कृष्ण अष्टमी- श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, इस दिन सुन्दर शृङ्गार रात्रि १२ बजे पंचामृताभिषेक, भोग, सोंठ, गून्द, अजवायन के लड्डू, धनिया की पंजीरी आदि उत्सव आरती के पश्चात् प्रसाद वितरण, दूसरे दिन पलना के दर्शन ।

१०. भाद्रपद शुक्ल अष्टमी-श्रीराधाष्टमी, इस दिन प्रातः ६ बजे अभिषेक, सुन्दर शृङ्गार, उत्सव आरती, पंचामृत-पंजीरी प्रसाद वितरण विशेष भोग, मंगल पद बधाई गान ।

११. भाद्रपद शुक्ल द्वादशी- वामन द्वादशी, इस दिन मध्याह्न में अभिषेक, सुन्दर वामन वेष का शृङ्गार, उत्सव आरती,

पंचामृत-पंजीरी प्रसाद वितरण मंगल पद बधाई गान ।

१२. आश्विन शुक्ल दशमी-विजयादशमी, सुन्दर श्रृङ्गार अपराह्न में आयुध पूजन विशेष भोग ।

१३. आश्विन शुक्ल पूर्णिमा-शरद् पूर्णिमा, इस दिन अभिषेक, सुन्दर श्वेत पोशाक, सायंकाल आरती के पश्चात् खीर बनाकर चाँदनी में २-३ घण्टा ठण्डी होने दे रात्रि में १२ बजे भोग व उत्सव आरती, प्रसाद वितरण ।

१४. कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी- या अमावस्या-दीपा-वली, इस दिन सुन्दर श्रृङ्गार, रात्रि में दीपावली (लक्ष्मी) पूजन ।

१५. कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा-(अन्नकूट) इस दिन कच्चा-पक्का दोनों ही प्रकार का भगवान् के राज भोग लगता है सभी प्रकार के फल भी होते हैं-दिन के १२-१ बजे दर्शन खुलते हैं आरती होकर प्रसाद वितरण होता है ।

१६. कार्तिक शुक्ल नवमी-अक्षय नवमी, इस दिन श्रीहँस-सनकादि जयन्ती एवं श्रीसर्वेश्वर भगवान् का प्राकट्य दिवस मनाया जाता है । भगवान् का अभिषेक, सुन्दर श्रृङ्गार, विशेष भोग, मंगल पद एवं बधाई गान किया जाता है ।

१७. कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा-श्रीनिम्बार्क जयन्ती, इस दिन सायंकाल मंगलपद बधाई गान, अभिषेक, श्रीनिम्बार्क भगवान् का प्राकट्य महोत्सव मनाकर उत्सव आरती तथा प्रसाद वितरण किया जाता है ।

१८. मार्गशीर्ष शुक्ल द्वादशी-व्यञ्जन द्वादशी तथा श्रीनारद जयन्ती मनाई जाती है । भगवान् का सुन्दर शृङ्गार विविध प्रकार के व्यञ्जनों का भोग धराया जाता है ।

१९. पौष मास-इस मास में भगवान् के मेवा की खिचड़ी का भोग तथा इस मास में एक बार बडा-भुजिया एवं गुलगुला का वृहद् रूप से भोग तथा प्रसाद वितरण, यह पौष बडा के नाम से प्रसिद्ध है ।

२०. माघ शुक्ल पंचमी-वसन्त पंचमी, इस दिन श्री निवासाचार्यजी श्रीदेवाचार्यजी तथा गीत गोविन्दकार श्रीजयदेव कवि का प्राकट्य दिवस और वसन्तोत्सव सुन्दर वसन्ती शृङ्गार गुलाल, सरसों के फूल, जौ की बाल आदि सेवा में आते हैं । राजभोग में वसन्ती रङ्ग के पदार्थ तथा वसन्त राग के पद गाये जाते हैं ।

२१. फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी या पूर्णिमा-होलिकोत्सव, सुन्दर शृङ्गार गुलाल व केशरिया रंग का प्रयोग श्रीप्रियाप्रियतम एवं सखिवृन्द परस्पर में होली खेल रहे हैं इस भाव से यह सेवा की जाती है । विशेष भोग ।

२२. चैत्र कृष्णा प्रतिपदा-फूलडोल, इस दिन सुन्दर सुवासित पुष्पों का बंगला उसमें प्रियाप्रियतम युगलकिशोर श्रीश्यामाश्याम के दर्शन गुलाल व केसर की पिचकारियाँ । भक्तों को प्रसाद वितरण । होली के पद गाये जाते हैं ।

संक्रान्ति

मकर संक्रान्ति पौष या माघ में आती है इन दोनों महीनों में कोई दिन आवे किन्तु इस दिन सदा ही १४ जनवरी का दिन पड़ेगा । इस दिन भगवान् के तिलों के लड्डू का भोग समर्पण एवं तिल के पदार्थों का, वस्त्रों का दान तथा गायों को घास डाला जाता है ।

सूर्य–चन्द्रग्रहण

अमावस्या को सूर्यग्रहण लगता है तथा पूर्णिमा को चन्द्रग्रहण । सूर्य ग्रहण का सूतक ४ प्रहर १२ घन्टे ग्रहण लगने से पूर्व तथा चन्द्रग्रहण का सूतक ग्रहण लगने के ३ प्रहर अर्थात् ६ घन्टे पूर्व लग जाता है । भगवान् की सेवाएँ सूतक के पूर्व समाप्त तथा ग्रहण शुद्धि के पश्चात् प्रारम्भ होती है । बीच में दर्शन बन्द रहते हैं ।

घर में देव पूजा का प्रकार

एका मूर्तिर्न पूज्यैव गृहिणा स्वेष्टमिच्छता ।
अनेक मूर्ति सम्पन्नः सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।।
गृहे लिङ्गद्वयं नार्च्यं गणेश त्रितयं तथा ।
शंखद्वयं तथा सूर्यौ नार्च्यौ शक्तित्रयं तथा ।।
द्वे चक्रे द्वारकायाश्च शालग्रामशिलाद्वयम् ।
तेषां तु पूजने नैव ह्युद्वेगं प्राप्नुयाद्गृही ।।
शिवस्य च रवेः स्नानं नैव शंखेन कारयेद ।।

प्रतिदिन घर में पूजा करे तो एक ही मूर्ति की नहीं करे। गणेश आदि अनेक मूर्तियाँ होनी चाहिये। हाँ उनमें उपास्य इष्टदेव एक ही हों। अन्य सब उनकी विभूति या अंश समझे। दो शिवलिङ्ग, दो शालग्राम, दो चक्र, तीन गणेश तथा तीन शक्ति की पूजा गृहस्थी को घर में नहीं रखनी चाहिये। ये उद्वेगकारक मानी गई है। शिव और सूर्य को शंख से स्नान नहीं कराना चाहिये।

देवपूजनस्यावश्यकता

यो मोहादथवाऽलस्यादकृत्वादेवपूजनम्।
भुंक्ते स याति नरकान् शूकरेष्विह जायते॥
दद्यात्पुरुषसूक्तेन यः पुष्पाण्यप एव वा।
अर्चितं स्याज्जगदिदं तेन सर्वं चराचरम्॥

(कूर्म पुराण)

सेवा-पूजा सम्बन्धी ज्ञातव्य विषय

१. भगवान् की सेवा-पूजा में पर्वतीय झरना, नदी, कूप, बावड़ी, या तालाब का जल ही सर्वोत्तम है।

२. विशेष परिस्थिति को छोड़ भगवत्सेवा एवं रसोई आदि में नित्य प्रति ताजा जल ही आना चाहिए। बासी नहीं।

३. गंगा-यमुना आदि का जल सदैव शुद्ध है, वह बासी नहीं माना जाता।

४. तुलसी, पान, पुष्प-माला आदि पदार्थों को जल से प्रोक्षण करके ही भगवत्सेवा में लेना चाहिए ।

५. **वस्त्र पूतं पिबेज्जलं** के अनुसार यथा देहे तथा देवे मानकर भगवत्सेवा एवं रसोई आदि में छना हुआ जल ही उपयोग में लेना चाहिए ।

पङ्कजं पञ्चरात्रेण, दशरात्रेण विल्वकम् ।
एकादशाहं तुलसी, नैव पर्युषिता भवेत् ।।

६. कमल का पुष्प पाँच रात्रि पर्यन्त, विल्वपत्र दश रात्रि पर्यन्त तथा तुलसीजी ग्यारह दिन पर्यन्त बासी नहीं होती अर्थात् ये पदार्थ भगवत्सेवा में आ सकते हैं, किन्तु यह बात वहाँ ही समझनी चाहिये जहाँ अभाव हो । **(नित्यप्रति ताजा उपलब्ध न होते हों) नित्यप्रति ताजा मिलने पर इस श्लोक की आड लेना तो आलस्य या उपेक्षा का कारण ही माना जायेगा ।**

७. भगवत्सेवा एवं रसोई आदि में रहते समय बाहर वाले व्यक्तियों से अनावश्यक अधिक बातचीत नहीं करनी चाहिए । आवश्यकता हो तो बाहर आ के ही बातचीत करे ।

पुनः हाथ पैर धोकर आचमन करके ही सेवा या रसोई में प्रवेश करें ।

८. नित्यप्रति स्नान के बाद सन्ध्यावन्दन और तिलक स्वरूप करके ही भगवत्सेवा या रसोई सेवा में प्रवेश करें ।

९. भैंस या गऊ ब्याने पर एक मास पश्चात् ही उनका दूध भगवत्सेवा में लेना चाहिये । साधारण गृहस्थियों की भाँति दश दिन पश्चात् नहीं ।

१०. मन्दिर, रसोईघर, जलघर, दूधघर और भण्डार आदि की स्वच्छता का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए ।

११. भगवत्सेवा, रसोई, जलघर, दूधघर आदि में स्नान के पश्चात् सन्ध्यावन्दन तिलक स्वरूप करके ही प्रवेश करना चाहिए ।

नाङ्गुष्ठैर्मर्दयेद्देवं नाधः पुष्पैः समर्चयेत् ।
कुशाग्रैर्न क्षिपेत्तोयं वज्रपातसमं भवेत् ।।

१२. भगवान् के श्रीविग्रह को अंगूठे का जोर देकर नहीं मलना चाहिए और पुष्प अधोमुख करके नहीं चढ़ाना चाहिए। इसी प्रकार कुशाओं के अग्रभाग से देवताओं पर जल नहीं छिड़के, ऐसा करना वज्रपात के समान है ।

१३. श्रीशालग्रामजी को चांवल, गणेशजी को तुलसी, दुर्गा को दूर्वा और सूर्यनारायण को विल्वपत्र नहीं चढ़ावे ।

अधोवस्त्रधृतं चैव जलेन्तः क्षालितं च यत् ।
देवता स्तन्नगृह्णन्ति पुष्पं निर्माल्यतां गतम् ॥

१४. धोती में रखा हुआ और जल में डूबोया हुआ पुष्प निर्माल्य हो जाता है । इसलिये देवता उसे ग्रहण नहीं करते हैं ।

शिवे विवर्जयेद् कुन्दमुन्मत्तं च तथा हरौ ।
देवीनामर्कमन्दारौ सूर्यस्य तगरं तथा ॥

१५. शिवजी को कुन्द, विष्णु को धत्तूरा, देवी को आक और मन्दार तथा सूर्य को तगर का पुष्प नहीं चढ़ावे ।

तुलसी मंजरीभिर्यः कुर्याद्धरिहरार्चनम् ।
न स गर्भगृहं याति मुक्ति भागी न संशयः ॥

१६. जो तुलसी की मञ्जरी से विष्णु भगवान् तथा शिव की पूजा करता है, उसको गर्भ में आना नहीं पड़ता इसमें कोई सन्देह नहीं । शिव को तुलसी केवल श्रावण मास में ही चढ़ाना बताया है सर्वदा नहीं ।

पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं नेष्टमधोमुखम् ।
यथोत्पन्नं तथा देयं विल्वपत्रमधोमुखम् ।।

१७. पत्र पुष्प तथा फल का मुख नीचा करके देवता को नहीं चढ़ावे । जैसे उत्पन्न होते हैं वैसे ही चढ़ावे । किन्तु विल्वपत्र को तो उलटा करके ही चढ़ाना चाहिए ।

पर्णमूले भवेद्व्याधिः पर्णाग्रे पापसंभवः ।
जीर्णपत्रं हरत्यायुः शिरा बुद्धिविनाशिनी ।।

१८. पान की डण्डी से व्याधि और अग्रभाग से पाप होता हैं । सड़ा पान आयु और शिरा बुद्धि को नष्ट करता है अतः डण्डी और अग्रभाग को तोड़ तथा शिरा को निकाल कर ही काम में लेना चाहिये ।

□